भारतीय ज्ञान परम्परा तथा भारतीय नृत्य कला

अदिति सामन्त (अनुसन्धात्री)
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110016

सारांशिका

भारतीय नृत्य कला एक विस्तृत और समृद्ध परंपरा है, जिसमें विभिन्न नृत्य शैलियाँ और विधायें शामिल हैं। भारतीय नृत्य को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैः शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य। भारत में नृत्य की परंपरा प्राचीन समय से रही है। हडप्पा सभ्यता की खुदाई से नृत्य करती हुई लडकी की मूर्ति पाई गई है, जिसमे साबित होता है कि उस काल में भी नृत्यकला का विकास हो चुका था। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय नृत्यकला का सबसे प्रथम व प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है इसको पंचवेद भी कहा जाता है। भारत में लोक संस्कृति की परंपरा इतनी समृद्ध रही है कि उनके बिना संस्कृति की चर्चा अधूरी रहेगी। लोक कला के सभी रूप स्वतः स्फर्त, कदाचित अपरिष्कृत और आम लोगों के लिए होते हैं। यह किसी भी मायने में शास्त्रीय रूप से निम्न कोटि का नहीं है। लोक कला किसी स्थान विशेष या विशेष जनसमूह की सामूहिक संपदा होती है। इसके प्रवर्तकों को भुलाया जा सकता है, किंतु उनके द्वारा विकसित शैली युगों–युगों तक बनी रहती है। प्रारंभ में धर्म से जुड़ी लोक कलाएं लोकप्रिय मनोरंजन का साधन बनी। भारत के हर क्षेत्र का अपना लोक नृत्य है।

मुख्य शब्द : परंपरा, नृत्य कला, शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य, मनोरंजन, शैलियाँ।

शास्त्रीय नृत्य –

शास्त्रीय नृत्य की विधायें प्राचीन परंपराओं और धार्मिक कथाओं पर आधारित हैं, और इन्हें सख्त नियमों और संरचनाओं के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इनमें प्रमुख विधायें शामिल हैंः

1. **भरतनाट्यम** : तमिलनाडु का यह नृत्य रूप देवी की पूजा से जुड़ा है और इसे अत्यंत भावुक और नाटकीय शैली के लिए जाना जाता है।

2. **कथकली** : केरल की इस नृत्य शैली में रंगीन वेशभूषा और विस्तृत मेकअप का उपयोग होता है, और इसमें महाभारत और रामायण की कहानियों का चित्रण किया जाता है।

3. **कुचिपुड़ी** : आंध्र प्रदेश का यह नृत्य रूप नाटकीय प्रदर्शन और नृत्य के मिश्रण के लिए प्रसिद्ध है।

4. **कथक** : उत्तर भारत की यह नृत्य शैली ताल और लय की जटिलताओं पर आधारित है और इसमें तीव्र पैरों की थाप और घूमने वाले आंदोलनों का महत्व है।

5. **ओडिसी** : ओडिशा की यह नृत्य शैली मंदिरों में पूजा के अंग के रूप में विकसित हुई और इसे सौंदर्य और अनुग्रह के लिए जाना जाता है।

6. **मणिपुरी** : मणिपुर की यह नृत्य शैली रास लीला और अन्य धार्मिक कथाओं पर आधारित है और इसमें कोमल और प्रवाही आंदोलनों का प्रयोग होता है।

7. **सत्रिया** : असम का यह नृत्य रूप वैष्णव मठों में विकसित हुआ और इसमें धार्मिक नाटकों और नृत्यों का प्रदर्शन किया जाता है।

8. **मोहिनीअट्टम** : केरल की एक अन्य नृत्य शैली, जो मोहिनी नामक अप्सरा की कथा पर आधारित है और इसे बेहद सौम्य और लयबद्ध आंदोलनों के लिए जाना जाता है।

लोक नृत्य : लोक नृत्य विभिन्न भारतीय राज्यों और क्षेत्रों की स्थानीय परंपराओं और सांस्कृतिक उत्सवों का अभिन्न अंग हैं। कुछ प्रमुख लोक नृत्य विधायें हैं–

1. **भांगड़ा** : पंजाब का यह नृत्य फसल कटाई के समय का उत्सव है और इसमें उत्साह और ऊर्जा की अधिकता होती है।

2. **गरबा** : गुजरात का यह नृत्य नवरात्रि उत्सव के दौरान किया जाता है और इसमें समूह में वृत्ताकार नृत्य होता है।

3. **लावणी** : महाराष्ट्र का यह नृत्य पारंपरिक रूप से नाटक के अंतर्गत प्रस्तुत किया जाता है और इसमें तेज गति और भावुक अभिव्यक्तियाँ होती हैं।

4. **घूमर** : राजस्थान का यह नृत्य विशेष रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है और इसमें घाघरा पहनकर घूमने का विशेष महत्व होता है।

5. **बिहू** : असम का यह नृत्य फसल उत्सव बिहू के दौरान किया जाता है और इसमें उल्लास और मस्ती का वातावरण होता है।

6. **यक्षगान** : कर्नाटक का यह नृत्य–नाट्य रूप धार्मिक कथाओं और लोक कथाओं का नाटकीय प्रस्तुतिकरण करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा –

"प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार के समृद्ध परंपरा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गयी है। भारत संस्कृति का समृद्ध भंडार है –जो हजारों वर्षों में विकसित है और यहाँ की कला, साहित्यिक कृतियाँ, प्रथाओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियां, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के स्थलों इत्यादि में परिलक्षित होता हुआ देखता है।

64 कलाएं

64 कला विभिन्न हिंदु शास्त्रों में सूचीबद्ध विज्ञान, अध्ययन, काल और सुसंस्कृत जीवन के कौशल का एक शास्त्रीय पाठ्यक्रम।

इसकी सबसे प्रसिद्ध उपस्थित कामा सू में है। जो कामुक सुखों के लिए समर्पित एक व्यापक मैनुअल है। कामसूत्र में इसके

प्राथमिक विषय के रूप में कामुक प्रेम की 64 गुप्त कलाओं अभांतर कला का विवरण दिया गया है। इनके अलावा यह सुसंस्कृत व्यक्तियों के लिए आवश्यक अध्ययन के रूप में 64 बाह्य कलाओं या अभ्यास कलाओं के सूचीबद्ध करता है। वे एक– 1. गीत विद्या–गायन की कला 2. वाद्य विद्या–संगीत वाद्य यंत्र बनाने की कला 3. नृत्य विद्या नृत्य शिल्प 4. नाट्यविद्या –नाट्यकला की कला 5. आलेख्य विद्या–चित्रकला की कला 6. वशेषकच्छेद्य विद्या–चेहरे और शरीर को रंग से रंगने की कला 7. तंदुला–कुसुम–बाली–विकार–चावल और फूलों से प्रसाद तैयार करने की कला इत्यादि।

भारतीय नृत्य कला :

भारत में नृत्य की परंपरा प्राचीन समय से रही है। हडप्पा सभ्यता की खुदाई से नृत्य करती हुई लडकी की मूर्ति पाई गई है, जिसमे साबित होता है कि उस काल में भी नृत्यकला क विकास हो चुका था। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय नृत्यकला का सबसे प्रथम व प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है इसको पंचवेद भी कहा जाता है।

नृत्य क्या है :

अंग : प्रत्यंग एवं मनोभावों के साथ की गई नियंत्रित गति को नृत्य कहा जाता है। प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से लेकर आधुनिक कला मर्मज्ञों, सभी ने गति और भावनाओं के प्रदर्शन को अपनी कलाओं में बाँधने का प्रयास किया है।

स्मरणीय तथ्य : भरत मुनि (दुसरी शताब्दी ई. पू) का नाट्यशास्त्र शास्त्रीय नृत्य पर प्राचीन ग्रंथ के रूप में उपलब्ध है, यो नाटक, नृत्य और संगीत कला की स्रोत पुस्तक है।

शास्त्रीय नृत्य शैलियां :

शास्त्रीय नृत्य भारत में कई रूपों में आया ।प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक अलग शैली उत्पन्न हुई, यद्यपि जुड़े एक समान है। भारत में शास्त्रीय नृत्य सात है –1. भरतनाट्यम 2. कथकली 3. मोहिनीअट्टम 4. कुचिपुड़ी 5. ओडिसी 6. कत्थक 7. मणिपुरी। वर्ष 2000 में असम के सत्तरिया नृत्य को संगीत नाटक अकादमी द्वारा भारत के आठवीं शास्त्रीय नृत्य के तौर पर मान्यता प्रदान की गई। वर्तमान भारत के सांस्कृतिक मंत्रालय ने ''छऊ'' / ''छाउ'' को शास्त्रीय नृत्य की सूची में शामिल किया है जिससे कुल 9 शास्त्रीय नृत्य रूप बनते हैं ।

भरतनाट्यम

कुछ विद्वानों का मत है कि इस नृत्य शैली का नाम भरत के नाट्यशास्त्र से लिया गया है। कुछ कहते हैं कि ''भ'' ''र'' और''त''तीनों क्रमशः भाव राग और ताल के लिए है। नाम में जो भी हो, तमिलनाडु में देवदासियों द्वारा विकसित हो वह प्रसारित इस शैली को सबसे प्राचीन नृत्य माना जाता है।

कुचिपुड़ी

यह नित्य शैली आंध्र प्रदेश की कुचेलपुरम या कुसीलवपुरी गांव के नाम पर कुचिपुड़ी का कहलाते है। कुसीलव गांव गांव घूमने वाले अभिनेताओं का दल था। संस्कृत के शब्द कुसीलवपूरी को हो बोलचाल की भाषा में कुछ कुचिपुड़ी कहाँ जाता है ।

ओडिसी

सांस्कृतिक इतिहास कारों ने यह माना है कि ओडिशा में नृत्य के प्राचीन अवशेष मौजूद है। बौद्ध व जैन युग के बने उदयगिरी, खण्डगिरी, जैन प्रस्तर मंदिर आदि स्थानों के अनेक शिलालेख गुफाचित्र भास्कार्यादि तथा नृत्य भंगिमाए उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त भुवनेश्वर के वेंकटेश मंदिर में भी प्राप्त असंख्या प्रमाणों से यह बात प्रमाणित होता है कि बे सब केवल धार्मिक स्थान ही नहीं थे, अपितु कला साहित्य, संगीत, नृत्य आदि के शिक्षा केंद्र भी थे ।

"इस नृत्य में सम्बलपुरी साडी की लांगदार धोती, आगे नाभि से नीचे की ओर में जुडा गोल पंखा लगा होता है। ओढनी कंधे पर जोडकर सी ली जाती है। साडी के ही रंग का ब्लाउज पहना जाता है। कमर पर चांदी की करघनी जिसे उडिया भाषा में बैंगी पटिया तहा जाता है बांधी जाती है। हाथ में उडिया आभूषण तान्जूल अर्थात् बाजूबन्द माथे पर सिन्धी यानि टीका तथा वेणी के ऊपर सीधा नोकदार टाटिया कस कर लगाया जाता है।"

कथकली

केरल के मंदिरों में पल्लवित एवं पुष्पित हुई इस नृत्य शैली के प्रेरणा स्रोत परंपरागत लोकनाटक कुडिअट्टम और कुष्णट्टम रहे हैं। कथकली दो शब्दों के मेल से बना है–कथा और कलि(नाटक)। ऐसा कहा जाता है कि बलवीर केरलन ने मानवेद के कृष्णट्टम की काट के लिए रमणट्टम को जन्म दिया धीरे–धीरे इसका विस्तार किया गया, जिसमें महाभारत, शिव पुराण इत्यादि से प्रसंग लिए गए। यही रमनट्टम कथकली के रूप में विकसित हुआ ।फिर यही मंदिरों से निकलकर लोकमंच पर आया। किंतु सामन्ती संरक्षण छिन जाने के कारण इन का विकास भी अवरुद्ध हो गया।

मोहिनी अट्टम

केरल के इस नृत्य की उत्पत्ति के संबंध में अधिक ज्ञात नहीं है। आमतौर पर यह माना जाता है कि 19वीं सदी के प्रारंभ में त्रावन कोर के महाराजा स्वाति तिरूनल के शासनकाल में इसका जन्म हुआ। इसके अधिकांश गीतों को स्वाति तिरुनल ने ही संगीत दिया है। मोहिनीअट्टम में भरतनाट्यम और कथकली दोनों के अंश पाए जाने जाते हैं, जिसमें पहले का ललिता और दूसरे का वीरत्व भाव होता है। कन्याएं ही इसका एकल प्रदर्शन करती है ।भस्मासुर वध के लिए विष्णु द्वारा मोहिनीरूप धरने की कथा इसका प्रधान विषय है ।

मणिपुरी

भारत की अन्य नृत्य शैलियों से भिन्न मणिपुरी नृत्य में शक्ति पर अधिक बल रहता है ।इसकी उत्पत्ति भी पौराणिक मानी जाती है वैष्णव बाद के आगमन के बाद इसे अधिक विकसित किया गया।

मणिपुरी नित्य भारत के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित राज्य मणिपुर में उत्पन्न हुआ। इसकी भौगोलिक स्थिति के कारण मणिपुर के लोग बाहरी प्रभाव से बचे रहे हैं और इसी कारण यह प्रदेश अपनी विशिष्ट परंपरागत संस्कृति को बनाए रखने में समर्थ है।

कथक

उत्तरप्रदेश की धरती पर जन्मे इस नृत्य की उत्पत्ति ब्रजभूमि के रासलीला से हुई है 14वीं–15वीं सदी तक सभी भारतीय नृत्य ,धर्म और मंदिरों से जुड़े हुए थे। कथक थी इसका अपवाद न था। इसका नाम ''कथिका'' का यानी कहानी कहने वाले, से निकला है। जो महाकाव्य के प्रसंगो का वर्णन संगीत और मुद्राओं से किया करते थे। धीरे–धीरे यह नृत्य का रूप लेता गया ।फिर भी इसके केंद्र में राधा–कृष्ण ही रहे। मुगल काल में इसका रूप दरबारी होता गया।

सत्तरिया नृत्य

सत्तरिया नृत्य का उद्गम सो लहवीं शताब्दी में ,जब इस क्षेत्र में शंकरदेव (1449–1568) द्वारा वैष्णव आंदोलन पूरे उफान पर था, असम में स्थापित सन्तरस या वैष्णव मठों के व्यापक नेटवर्क में से हुआ।

छऊ नृत्य

"छऊ का अर्थ है छाया दर्पण। जिस प्रकार हम दर्पण मे अपनी छवि देख सकते है ठीक उसी प्रकार अंग प्रत्यंग उपांगो के तोड़ /मरोड़ द्वारा छऊ नृत्य में मनोभावना को अभिव्यक्त किया जाता है। छाउ नृत्य है तो प्राचीन ,लेकिन उसकी उत्पत्ति के संबंध में ज्ञात नहीं है। छाउ शब्द ''छाया ''से लिया गया है और इससे ''मुखौटा''या ''छाया'' का संकेत मिलता है। एक अन्य व्याख्या के अनुसार यह उरांव भाषा का देशी शब्द है और इसका प्रयोग युद्ध नृत्य के लिए होता था, न कि मुखौटा नृत्य के लिए। इसकी कई मुद्राएं परंपरागत युद्ध की मुद्राओं से मिलती है।"

लोक नृत्य

भारत में लोक संस्कृति की परंपरा इतनी समृद्ध रही है कि उनके बिना संस्कृति की चर्चा अधूरी रहेगी। लोक कला के सभी रूप स्वतः स्फर्त, कदाचित अपरिष्कृत और आम लोगों के लिए होते हैं। यह किसी भी मायने में शास्त्रीय रूप से निम्न कोटि का नहीं है। लोक कला किसी स्थान विशेष या विशेष जनसमूह की सामूहिक संपदा होती है। इसके प्रवर्तकों को भुलाया जा सकता है, किंतु उनके द्वारा विकसित शैली युगों–युगों तक बनी रहती है। प्रारंभ में धर्म से जुड़ी लोक कलाएं लोकप्रिय मनोरंजन का साधन बनी। भारत के हर क्षेत्र का अपना लोक नृत्य है।

वर्तमान समय में भारत में कुल 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश है ।भारत के इन राज्य और प्रदेश में विभिन्न लोक नृत्य प्रसिद्ध है।

लोक नृत्य और उनके राज्य

1. **अरुणाचल** : प्रदेश / बुईया, छालो, वांचो कोंगकी, पोनगं, पोपीर, बारडो छाम्।
2. **असम** : बीहु, बीझुआ, नटपूजा महारास, कालिगोपाल, बागुरुम्बा, नागा नत्य, खेल गोपाल, कोनाई, झूमूरा हो बजनाई।
3. **आंध्रप्रदेश** : वीरनाट्यम्, बुट्टा बोम्मलु, भामाकल्पम्, दप्पू, चप्पेटा गुल्लू, लंबाडी ढिस्सा, कोलट्टम्।
4. **कर्नाटक** : यक्षगान, हुत्तारी, सुग्गी, कुनिथा, करगा, लांबी।
5. **केरल** : कुरावारकली (Kuravarakali)
6. **बिहार** : जट दृ जटिन, पंवरिया, बिदेसया।
7. **गुजरात्** : गरबा, डांडिया रास, टिप्पनी जुरुन, भावई।
8. **हरियाणा** : झूमर, फाग डाफ, धमाल, लूर, गुग्गा, खोर, जागोर।
9. **हिमाचल प्रदेश** : झोरा, छारही, धामन, छापेली महीसू, नटी डांगी।
10. **जम्मू कश्मीर** : रुउफ हीकत, मंदजात, कूद डांडी नाचा।
11. **महाराष्ट्र** : लावणी, डिंडी (Dindi), काला (Kala), दहीकला दसावतारा।
12. **ओडिसा** : गोतिपुआ (Gotipua), छाउ, घूमूरा (Ghumura),. रानाप्पा (Ranappa), संबलपुरी नृत्य।
13. **पश्चिम बंगाल** : लाठी, गंभीरा, ढीला, जात्रा, बाउल, पडवा, छाऊ, संथाली नृत्य।
14. **पंजाब** : भांगडा, गिद्दा, दफ्फ, धामल (Dhamal nadkjk) (Dankara)।
15. **राजस्थान** : धूमर, गणगौर झूलन लीला, कालबेलिया छारी (Chari)।
16. **तामिडनाडु** : कुमीस कोलट्टम कवादी अट्टम्।
17. **उत्तरप्रदेश** : नौटंकी, रासलीला, कजरी, चाप्पली।
18. **उत्तराखंड** : भोटिया नृत्य (Bhotia Dance), चमफुली (Chafuli) और छोलिया (Chholia)।
19. **गोवा** : देक्खनी, फुग्दी, शिग्मो, घोडे, जगोर, गोंफ, टोन्या मेल (Tonyamel) ।
20. **मध्यप्रदेश** : जरावा, मटकी, अडा, खडा, नृत्य, फुलपति, ग्रिडा नृत्य, सालेलार्की, सेलभदोनी मंच।
21. **छत्तीसगढ** : गौर मारिया, पैथी, राउत नाच, पंडवाणी, वेडामती कपालिक, भारथरी चरित्रच चंदनानी।
22. **झारखंड** : झूमर, जनानी झूमर, मर्दाना झूमर, पैका, फगुआ, मुंदारी नत्य, सरहुल, बाराओ, झीटका, डांगा डोमचक, धोरा नाच।
23. **मणिपुर** : डोल चोलम्, थांग ता लाई हराओबा, पुंग चोलोम. खंबा थाइबी, नुपा नृत्य, रामलीला।
24. **मेघालय** : शाद सुक मिनसेइम्, शाद नाँग्गरेम् लाहो।
25. **मिजोरम्** : चेराव नृत्य, खुल्लम, चौलम्ष च्वागलैजान, जंगतालम्, सरलकई, सोलकिया तलंगलम्।
26. **नागालैड** : रेंगमा (Rengma), बांस नृत्य चंगी नृत्य (Chagai Dance), आलीयुट्ट (Aaluyattu)।
27. **सिक्किम** : **सिंघी** – छाम (Singhi Chaam) और याक छाम, तमांग सेलो (Tamang Selo) मारुनी नाच।
28. **त्रिपुरा** : होजागिंरी, गारिया, झुमा।
29. **लक्षद्वीप** : लावा, कोलकाली, परीचकली।

निष्कर्ष :

भारतीय नृत्य कला की विधायें न केवल कला और संस्कृति की अभिव्यक्ति हैं, बल्कि वे सामाजिक और धार्मिक जीवन का भी अभिन्न हिस्सा हैं। प्रत्येक नृत्य शैली अपने अनूठे इतिहास, तकनीक, और प्रस्तुतिकरण शैली के माध्यम से भारतीय संस्कृति की विविधता और गहराई को प्रदर्शित करती है। शास्त्रीय नृत्य जहां परंपरा और अनुशासन का पालन करते हैं, वहीं लोक नृत्य जीवन की उल्लासमय और सजीव अभिव्यक्तियों का प्रतीक हैं। भारतीय नृत्य की यह विविधता न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में कला प्रेमियों के लिए प्रेरणा और आनन्द का स्रोत है।

सन्दर्भ :

1. शर्मा, राजेन्द्र प्रसाद एवं प्रधान श्याम नारायण (2015) भारतीय संस्कृति स्पेक्ट्रम् बुक प्रा. लिमिटेड, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058।
2. केतकर कु. गोदावरी वासुदेव (1998) नाट्यशास्त्र, परिमल पब्लिकेशन, शक्तिनगर, दिल्ली–110007।
3. द्विवेदी, डा० पारसनाथ (2001) नाट्यशास्त्र का इतिहास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी उत्तरप्रदेश।
4. तिवारी डा० शशि (2002), नृत्यरत्नावली, विद्यानिलयम्, पीतमपुरा–नई दिल्ली–110034।
5. गुप्ता डा० सुषमा देवी (2006) भारतीय ललित कलाएँ एवं नृत्य कला, प्रतिभा प्रकाशन, शक्तिनगर, दिल्ली–110007।
6. नागर, रविशंकर एवं जोशी, के एन (2003) नाट्यशास्त्रम्, परिमल पब्लिकेशन, शक्तिनगर दिल्ली–110007।
7. नागर (व्यास), सन्तोष (2015) वेंदों–पुराणों में नृत्या कला, श्रीकृष्ण साहित्य सदन, दिल्ली 110084।
8. शर्मा आर.ए. (2011) शिक्षा अनुसंन्धान कते मूल तत्त्व एवं शोधप्रक्रिया, आर.एल, बुक, डिपो, मेरठ, उत्तरप्रेदश।
9. शर्मा, पी.वी. (2015) रिसर्च मेथडॉलाजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान।
10. मंगल एस.के.एवं. मंगल शु. (2017) व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियां, पीएच.आई. लर्निंग नई दिल्ली।
11. पाण्डेय, आर,एस (2003) शिक्षा मनोविज्ञान, आरएल बुक डिपो, मेरठ, उत्तरप्रदेश।
12. गुप्ता.एस,पी (2015) अनुसंधान सदिर्शका, शारदा पुस्तर भवन, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश। राष्ट्रीय शिक्षा नाति 2020, भारत सरकार, नई–दिल्ली।